फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 219 सितम्बर 2006

कहत कबीर

साथ रहने वालों के सग चालाकी, आसपास वालों के साथ चालाकी, सहकर्मियों के संग चालाकी, सहयात्रियों के साथ चालाकी अपने आगे ही सिकुड़े जीवन को और सिकोड़ना है।

मजदूरों को दिखाना ही नहीं (4)

गुत्थी उत्पादन छिपाने की..... चोरी में चोरी

✱ कभी- कभार के शोषण की बजाय नियमित शोषण ऊँच- नीच, अमीरी- गरीबी वाली समाज व्यवस्थाओं का आधार होता है। नियमित शोषण के लिये शोषण- तन्त्र आवश्यक होते हैं। और चूँकि शोषितों द्वारा शोषण का विरोध स्वाभाविक है, किसी भी शोषण- तन्त्र को नियमित दमन की आवश्यकता होती है। शास्त्र और शस्त्र की जुगलबन्दी के संग पृथ्वी पर दमन- तन्त्रों का श्रीगणेश हुआ। दमन- तन्त्र का ही दूसरा नाम, अधिक प्रचलित नाम सरकार है। ✱ दमन- तन्त्र की विशेषता यह है कि यह खर्चा माँगता है। सरकार के खर्च का आदि- स्रोत टैक्स हैं और हाथ उत्पादन के आदि- स्रोत, इसीलिये कर = हाथ, कर = टैक्स। अधिक समय नहीं हुआ, महलों- किलों में रहने वाले राजा- सामन्त सरकार थे और भूदासों से उपज का छठा हिस्सा ($16^2/_3$%) वसूलने का कानून था। आज विधायक- सांसद- अधिकारी वाली सरकार के खर्च की पूर्ति के लिये कुल उत्पादन व खपत का आध से ज्यादा हिस्सा लिया जाता है। सरकारों द्वारा उपज- खपत का लगभग 70 प्रतिशत विभिन्न प्रकार के टैक्सों के रूप में वसूलने के कानून हैं। ✱ भूदासों द्वारा अपनी उपज का $83^1/_3$% रखना कानून अनुसार था। उत्पादकता में छलाँगें लगी हैं और आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक- दो प्रतिशत मजदूरों के हिस्से में आना कानून अनुसार है। बाकी के 98 प्रतिशत में शोषण- तन्त्र और दमन- तन्त्र में हिस्सा- बाँट होती है। ✱ कानूनी और गैर- कानूनी में चोली- दामन का साथ रहा है। प्रहरी, कोतवाल, मन्त्री द्वारा रिश्वत लेने के किस्से बहुत पुराने हैं। दरअसल दमन- तन्त्र रिश्वत की चर्बी के बिना चल ही नहीं सकते। इसलिये नगर- प्रान्त- देश के दायरों में कैद हो कर भ्रष्टाचार आदि को मूल समस्या मानना नादानी के सिवा और कुछ नहीं है। हाँ, गैर- कानूनी को मर्ज और कानून को दवा पेश कर कानून अनुसार दमन- शोषण को छिपाने का नुस्खा पुराना है, यह शुद्ध काँइयापन है। ✱ आज नई बात दमन- तन्त्र के संग- संग शोषण- तन्त्र में भी कानूनों का उल्लंघन, गैर- कानूनी कार्यों का बहुत- ही बड़े पैमाने पर होने लगना है। मण्डी- मुद्रा के साम्राज्य में कानूनों का यह अर्थहीन होना राजाओं- सामन्तों के अन्तिम चरण में कानूनों के अर्थहीन होने जैसा लगता है।

दिल्ली और इसे घेरे नोएडा, सोनीपत, बहादुरगढ़, गुड़गाँव, फरीदाबाद में फैक्ट्रियों में कार्य करते 70- 75 प्रतिशत मजदूरों को अब दस्तावेजों में दिखाना ही नहीं को विलाप की वस्तु की बजाय नई सम्भावनाओं से ओत- प्रोत के तौर पर देखना बनता है।

मण्डी- मुद्रा की गतिक्रिया के चलते, मण्डी- मुद्रा के दबदबे के चलते कानूनी/गैर- कानूनी में हुई इस उलट- फेर की अनिवार्यता के सन्दर्भ में यहाँ हम इन दो सौ वर्षों के दौरान मालिकाने में आये परिवर्तनों पर चर्चा जारी रखेंगे।

- आज "सदा से" जैसी लगती फैक्ट्रियों को सवा दो सौ वर्ष ही हुये हैं। प्रारम्भिक फैक्ट्रियों में दस्तकारों के औजारों का ही प्रयोग होता था। अलग- अलग व्यक्ति द्वारा उत्पाद तैयार करने की तुलना में व्यक्तियों द्वारा मिल कर प्रोडक्ट तैयार करने का अधिक उत्पादक होना, सामुहिक श्रम की अधिक उत्पादकता फैक्ट्री उत्पादन का एक आधार था। दस्तकारों की तुलना में एक छत तले एकत्र किये मजदूरों पर नियन्त्रण की अधिक सम्भावना फैक्ट्री उत्पादन का दूसरा आधार था। भाप- कोयला आधारित मशीनरी ने दस्तकारों के औजारों की जगह ली, फैक्ट्री उत्पादन को स्थापित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। और, फैक्ट्री उत्पादन दस्तकारी- किसानी को सामाजिक मौत लिये है। फैक्ट्रियों पर मेहनतकशों के हमलों के कारण इंग्लैण्ड में किलेनुमा फैक्ट्रियाँ बनाई गई और सरकार की फाँसी- गोली ने इंग्लैण्ड में मेहनतकशों को कुचल कर फैक्ट्रियों के लिये रास्ता साफ किया। इसे दो सौ वर्ष भी नहीं हुये हैं।

- दस्तकारों के औजारों वाली फैक्ट्रियों और फिर भाप- कोयला आधारित मशीनरी वाली आरम्भिक दौर की फैक्ट्रियों की स्थापना व संचालन की लागत आज की तुलना में बहुत- ही कम थी। दूरदराज के व्यापार से प्राप्त मुनाफों ने इंग्लैण्ड में कई व्यक्तियों को अपनी- अपनी फैक्ट्री स्थापित करने की स्थिति में ला दिया था। ऐसा ही हुआ भी। इंग्लैण्ड में प्रारम्भिक दौर में फैक्ट्री इस अथवा उस व्यक्ति की निजी सम्पत्ति थी। दस्तकारी- किसानी का स्थान लेती उत्पादन की नई पद्धति इस वजह से फैक्ट्री मालिकों- कारखानेदारों- पूंजीपतियों के नाम से चिन्हित हुई, निजी सम्पत्ति से चिन्हित हुई।

- इंग्लैण्ड में सवा दो सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हुई मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली नई पद्धति आज पूरे संसार में छा गई है। इस नई पद्धति के आरम्भिक दौर में नये उत्पादन- स्थलों, फैक्ट्रियों के मालिक अलग- अलग व्यक्ति थे। फैक्ट्री के किसी की निजी सम्पत्ति होने, प्रायवेट प्रोपर्टी होने का दबदबा इस कदर था कि नये सामाजिक सम्बन्ध की मुख्य चारित्रिकता के तौर पर इसके निजी सम्पत्ति आधारित होने को लिया गया।

- नई पद्धति, फैक्ट्री उत्पादन अपने संग शोषण में छलाँग लिये थी। और, शोषण में छलाँग के संग दमन में छलाँग एक अनिवार्यता के तौर पर होती है। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका 98- 99 प्रतिशत शोषण व दमन तन्त्र हड़प लेते हैं जबकि 1850 के आसपास यह पचास प्रतिशत के करीब था। फिर भी, 1850 में 50 प्रतिशत शोषण और उस से जुड़े दमन को इस कदर अत्याचारी पाया गया कि उन्हें उखाड़ फेंकने के लिये बगावतें संगठित करना, क्रान्ति के प्रयास महत्वपूर्ण बने। उस दौरान मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन में, इंग्लैण्ड में, फैक्ट्रियों के निजी सम्पत्ति होने के सन्दर्भ में शोषण- दमन को उखाड़ फेंकने के लिये निजी सम्पत्ति के उन्मूलन को, प्रायवेट प्रोपर्टी की समाप्ति को मूल सूत्र के तौर पर देखा- लिया गया। दमन- शोषण की नई पद्धति के अंकुर चरण की मार्क्स द्वारा की गई चीर- फाड़ इस कदर तीक्ष्ण थी कि उसका आज भी व्यापक प्रभाव है।

- नये दमन- शोषण से मुक्ति के लिये, दमन- शोषण से सदा- सर्वदा छुटकारे के वास्ते निजी सम्पत्ति की समाप्ति मुख्य सूत्र- मन्त्र- नारा बनी। और, मार्क्स के सामने ही फैक्ट्री की स्थापना व संचालन की लागत इतनी तेजी से बढ रही थी कि फैक्ट्री मालिक बनना- बने रहना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा था। एक व्यक्ति के बूते से बाहर के हालात एक आना- दो आना- चार आना की साझेदारियों को, ज्वाइन्ट स्टॉक कम्पनियों को उभार रहे थे। संग ही संग मजदूरों की सहकारी फैक्ट्रियाँ भी उभर रही थी। ज्वाइन्ट स्टॉक कम्पनियों को " मालिक नहीं, पर फिर भी (बाकी पेज दो पर)

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

अनिल रबड़ मजदूर : "प्लाट 30 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 28 स्थाई तथा 70 कैजुअल वरकर तीन शिफ्टों में काम करते हैं। कैजुअल वरकर की भर्ती 3 महीने के लिये करते हैं और भर्ती वास्ते 300 रुपये रिश्वत लेते हैं। कैजुअलों को रोज 8 घण्टे ओवर टाइम करना पड़ता है, रविवार को भी ड्युटी। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से पर कैजुअलों को सिंगल रेट से और ऊपर से प्रतिमाह ओवर टाइम के 40 घण्टे अधिकारी खा जाते हैं। ब्रेक पर कैजुअल वरकर से बोनस राशि पर हस्ताक्षर करवाते हैं पर यह पैसे देते नहीं।"

सुडट्रैक लिन्केज वरकर : "13/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 800 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 के ही हैं। स्थाई मजदूर 50 हैं और बाकी को 12 ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों की तनखा 1500 तथा ऑपरेटरों की 1800-2000 रुपये और ठेकेदार गाली देते हैं। फैक्ट्री में हाथ कटते रहते हैं — एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते और कुछ दिन इलाज करवा कर निकाल देते हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जून की तनखा 28 जुलाई को जा कर दी थी, जुलाई की आज 21 अगस्त तक नहीं दी है।"

डी.एस. बुहिन मजदूर : "प्लॉट 88 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 वरकरों में से 12 ही स्थाई हैं। भर्ती के समय ठेकेदार रिश्वत लेता है और तनखा 2000 रुपये बताता है पर देता 1700 है। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और इन में से भी ठेकेदार पैसे लेता है। आधे से भी कम मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। पीने का पानी नहीं, हाथ धोने का साबुन नहीं और सुपरवाइजर गाली देते हैं। फैक्ट्री में मारुति कार के पुर्जे बनते हैं।"

इम्पीरियल ऑटो मजदूर : "प्लॉट 94 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 1200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। आधे मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे 15 रुपये प्रतिघण्टा और आधों को 8½ रुपये प्रतिघण्टा की दर से देते हैं। कम्पनी के 8 वरकरों को भी ठेकेदार कहते हैं और इन अन्दर वालों के जरिये रखे 600 मजदूरों को वर्दी, जूते, बोनस दिये जाते हैं। सुपीरियर और श्रीजी, दो बाहर वाले ठेकेदारों के जरिये रखे 600 वरकरों को बोनस नहीं और सुपीरियर द्वारा तो तनखा में से काटी पी.एफ. की राशि भविष्य निधि कार्यालय में जमा ही नहीं की जाती। फैक्ट्री में रबड़ के होज बनते हैं जो जापान, अमरीका, इंग्लैण्ड निर्यात किये जाते हैं। उत्पादन में बहुत रसायन इस्तेमाल किये जाते हैं — थिन्नर ज्यादा काम में लिया जाता है और मजदूर बेहोश हो जाते हैं। कम्पनी गुड़ नहीं देती, साबुन नहीं देती। मजदूरों को टी.बी. आम बात है — एक स्थाई मजदूर की टी.बी. से मृत्यु। इम्पीरियल ऑटो में हाथ बहुत कटते हैं — हाथ कटे मजदूर को नौकरी से निकाल देते हैं। मैनेजर बहुत गाली देते हैं।"

मकास ब्रेक शू वरकर : "प्लॉट 111 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री के नाम बदलते रहे हैं पर उत्पादन में खतरनाक एस्बेसटोस का प्रयोग जारी है। इधर कम्पनी नई-नई मशीनें लाई है, फैक्ट्री में जगह कम और मशीनें ज्यादा के कारण प्रदूषण, एस्बेसटोस वाला प्रदूषण बहुत बढ गया है। इधर कम्पनी ने फरवरी के ओवर टाइम के पैसे जुलाई में जा कर दिये, अप्रैल से जुलाई के ओवर टाइम के पैसे आज 19 अगस्त तक नहीं दिये हैं।"

स्टार वायर मजदूर : "21/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री के एस.एम.एस. विभाग की इन्डक्शन भट्टी पर हर दूसरे-तीसरे दिन कोई न कोई मजदूर जल ही जाता है। कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती। फैक्ट्री के अन्दर ही एक डॉ. पी.सी. गुप्ता को रखा है मरहम-पट्टी के लिये। तनखा में से 14½ % ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड की पर्ची नहीं। बहुत गर्म काम है, भर्ती के समय ठेकेदार 2900 रुपये तनखा बताता है पर दिये 2100-2300 रुपये जाते हैं हालांकि हस्ताक्षर 2900 पर करवाते हैं।"

श्री भिक्षु कम्पोनेन्ट्स वरकर : "प्लॉट 384 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ई.एस. आई. व पी.एफ. 11 के ही — एक्सीडेन्ट होने के बाद ही अन्य किसी वरकर की ई.एस.आई. करवाते हैं। हैल्पर की तनखा 1800 और ऑपरेटर की 2300 रुपये। कहते हैं ठेकेदारी है पर कोई ठेकेदार नहीं है। मटकों से 3-4 दिन पुराना बदबूदार पानी पीना पड़ता है। डायरेक्टर गाली बहुत देता है, थप्पड़ भी मार देता है।"

एल्पिया पैरामाउन्ट मजदूर : "प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 250 स्थाई तथा 250 कैजुअल वरकर हैं। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कैजुअल वरकरों की तनखा 1700-1800 रुपये। ई.एस. आई. व पी.एफ. तीन महीने काटते हैं तथा फिर बन्द कर देते हैं हालांकि वरकर फैक्ट्री में काम करते रहते हैं।"

कास्टमास्टर वरकर : "प्लॉट 64 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 7 अगस्त को दिन के 11 बजे एक मजदूर छत से गिरा और तत्काल मृत्यु का शिकार हुआ। एग्जास्ट पँखा लगाने के लिये छत पर चढा मजदूर चद्दर समेत गिरा था — छत की चद्दरें पुरानी हैं। कम्पनी का डायरेक्टर उस समय फैक्ट्री में था पर देखने तक नहीं पहुँचा। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में एक मिनट काम बन्द नहीं होने दिया। मृत मजदूर को कम्पनी जिला अस्पताल ले गई थी। मृत मजदूर का नाम नहीं पता।"

आर.आर. मैटल मजदूर : "प्लॉट 187 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में पावर प्रेसों पर काम का दबाव ज्यादा है — घण्टे के 500 पीस, ब्लैन्क रहे तो 1000। हाथ कटते रहते हैं, सस्ते के लिये लगाई जाती ओपन डाई के कारण ज्यादा हाथ कटते हैं। फैक्ट्री में 100 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 5-7 के ही हैं। प्रेस ऑपरेटर हो चाहे हैल्पर, तनखा 1800 रुपये। एक शिफ्ट है 12 घण्टे की — 3½ घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं पर भुगतान सिंगल रेट से।"

नूकेम वरकर : "54 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा आज 22 अगस्त तक नहीं दी है।"

मजदूरों को दिखाना ही नहीं....

(पेज एक का शेष)

मालिक बन" शोषण जारी रखने के कारण नकारात्मक निषेध के तौर पर लिया गया जबकि सहकारी कारखानों को सकारात्मक निषेध के तौर पर देखा गया। मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन में निजी सम्पत्ति को इस कदर महत्वपूर्ण माना गया था कि प्रायवेट प्रोपर्टी की सीमायें पार होने को तब नई समाज रचना की दस्तक की तरह लिया गया। फैक्ट्री उत्पादन में संस्था-कम्पनी स्वरूप द्वारा गति पकड़ने और फिर छा जाने के बावजूद "मुक्ति के लिये निजी सम्पत्ति के उन्मूलन" की रट के दुखद परिणामों पर बात आगे होगी।

- समाज में शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों की हालातों में अधिक लागत और दीर्घकालीन निवेश के लिये संस्थागत स्वरूप अनिवार्य बन जाते हैं। संस्था का सर्वोपरि उदाहरण सरकार को कह सकते हैं। अस्त्र-शस्त्र, सेना, किले, महल, मन्दिर, प्रहरी, कारागार इस संस्था के प्रतीक रहे हैं। अगर पृथ्वी चपटी नहीं बल्कि गोल है तो.... मण्डी-मुद्रा के सन्दर्भ में भारत से व्यापार के लिये दूसरी राह तलाशने वास्ते कोलम्बस के समुद्री बेड़े का गठन पुर्तगाल सरकार (राजा) ने किया था। डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को विगत [illegible] दूरदराज से व्यापार के लिये संस्थाओं के [illegible] उदाहरणों के तौर पर ले सकते हैं। और फिर [illegible] कम्पनियाँ। कोलम्बस, ईस्ट इण्डिया कम्पनियां [illegible] रेल कम्पनियों के सरकारों के साथ घी-शक्कर होने और उनकी लूट, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार आतंकवाद में वर्तमान की संस्थाओं-कम्पनियों की चारित्रिकता के दर्शन बखूबी होते हैं। [illegible] कम्पनियाँ हमें फैक्ट्री उत्पादन में कम्पनियों-संस्थाओं के निकट ले आती हैं। (जारी)

एस्कोर्ट्स

एस्कोर्ट्स मजदूर: "18 अगस्त को आमसभा में यूनियन लीडर एम ओ यू (सहमति पत्र) के आधार पर बोले। एग्रीमेन्ट अभी मसौदा चरण (ड्राफ्टिंग) में है इसलिये कुछ बातें स्पष्ट नहीं हैं।

"1.6.02 से नया त्रिवर्षीय समझौता होना था पर हुआ अब जा कर है। भूखा था, थोड़ा दाना डल गया वाली बात है। सुनाये जाने के समय 'चलो कुछ तो हुआ' वाली बात थी। अन्दाजे 5500 रुपये से अधिक के थे और आश्वासन जनवरी 06 से लागू होने के। इसलिये 4500 रुपये और अगस्त से (एरियर बहुत कम) की बातों पर निराशा हुई। सुनते समय कुल मिला कर जो ठीक लगा था वह अब प्रैक्टिस में भारी पड़ने लगा है। इसलिये विरोध है पर खुले में कर नहीं पा रहे, अन्दर से डरे हुये हैं।

"डर इस बात से है कि पहले कोई लीडर समझौता लागू कराने में सक्रियता नहीं दिखाते थे परन्तु इस बार लीडर एक-एक बन्दे के पास जा कर कह रहे हैं कि उत्पादन बढाओ। जबरदस्ती वाली बात है इसलिये भय तो होना ही है। उत्पादन में भारी वृद्धि लागू करने के लिये बढे पैसे सितम्बर की तनखा के साथ देने की शर्त मैनेजमेन्ट ने रखी है। कम्पनी एक शिफ्ट पूरी भर कर और जिन मशीनों पर नहीं हो सकता उन पर दूसरी शिफ्ट के जरिये नये निर्धारित उत्पादन में सफलता दिखा रही है। रेलवे डिविजन में कम्पनी की चल नहीं पाने पर यूनियन लीडरों और बड़े साहबों ने मिल कर फैक्ट्री के अन्दर पार्क में मजदूरों की मीटिंग ली है। थोपने वाली बात है। समझौते से पहले यूनियन लीडरों और मैनेजरों के मुम्बई-पुणे, बंगलोर-चेन्नै इन्डस्ट्रीयल टूर आशंका बढाते हैं।

"40 प्रतिशत का बेसिक में जाना, कुछ कटौती के बाद एडहॉक को बेसिक में शामिल करना, कार्यरत मजदूर की मृत्यु पर परिवार को कम्पनी द्वारा 2 लाख की जगह 4 लाख रुपये देना, डी.ए. प्रति पाइन्ट 2.10 से बढाकर 2.40 रुपये करना (तीसरे वर्ष में 2.50), वार्षिक वेतन वृद्धि डेढी करना, सर्विस अवार्ड में 1000 रुपये बढाना आदि से सेवानिवृति पर 40,000 रुपये और वी.आर.एस. पर 2½ लाख के करीब बढोतरी होगी।

"रिटायर की आयु से 3 वर्ष से पहले नौकरी छोड़ने पर शर्तें पूरी करते लड़के को नौकरी वाली बात अटपटी है। वी.आर.एस. वाले 4 लाख रुपये छोड़ने पर तो लड़के को ट्रेनी रखा जायेगा। फिर पिता की 15,000 तनखा की जगह लड़का पहले वर्ष 5000, दूसरे में 6000 और तीसरे वर्ष में 7000 रुपये प्रतिमाह मानदेय ले। यह तो ट्रेनी रखने के लिये कम्पनी द्वारा 4 लाख की रिश्वत लेने और फिर 4 लाख अतिरिक्त निचोड़ने के बाद भी नौकरी की गारन्टी नहीं वाली बात हुई।

"पिछली एग्रीमेन्ट वाले 70+70=140 और 60+60=120 ट्रैक्टर प्रतिदिन नहीं बनवाये गये क्योंकि कम्पनी बेच नहीं पाई, 260 तो क्या 100 ट्रैक्टर प्रतिदिन का औसत मुश्किल पड़ा। अब 90+90 और 80+80, प्रतिदिन 340 ट्रैक्टर बनाने वाला समझौता ऐसे में ढेरों आशंकाओं को जन्म देता है। लगता है कि यह समझौता सिंगल शिफ्ट के लिये है। इस समय सब प्लान्टों में दो शिफ्ट के हिसाब से स्थाई मजदूर कम पड़ते हैं – डेढ शिफ्ट के वरकर हैं। इसलिये परमानेन्ट वरकर फालतू होने वाली बात नहीं है पर एक शिफ्ट की हालात में यह स्थिति पूरी तरह पलट जाती है। एम ओ यू के बाद थर्ड प्लान्ट में 21 अगस्त से शुरू की गई एक शिफ्ट के साथ 400 कैजुअल वरकर निकाल दिये गये और बाकी बचे 200 को निकाला जायेगा। कहते हैं कि सब प्लान्टों से सब कैजुअलों को निकाला जायेगा। परमानेन्टों को पूरा काम करना पड़ेगा। परन्तु बात इतनी ही नहीं लगती। जनरल शिफ्ट में बुला कर सी एच डी प्लान्ट में कम्पनी ने 25-30 स्थाई मजदूरों को खाली बैठाना शुरू कर दिया है। रेलवे डिविजन में सब कैजुअल वरकर 4 सितम्बर को निकाल दिये गये और 63 परमानेन्टों के फालतू हो जाने की बातें हैं..... लीडर कहते हैं कि किसी की नौकरी नहीं जायेगी, कोई सरप्लस नहीं है, बाहर ट्रान्सफर नहीं होंगे। परन्तु गुडईयर में बड़े पैमाने पर छँटनी में अग्रणी रहे साहब का एस्कोर्ट्स में आना आशंकाओं को बढाता है। एक शिफ्ट करना, परमानेन्ट वरकर कम करना और ट्रैक्टरों की माँग बढने पर मिनी एग्रीमेन्ट द्वारा एक शिफ्ट में 100+90 ट्रैक्टर पक्की-सी बातें लगती हैं। कुछ लोग सोचते लगते हैं कि बढे पैकेज के कारण काफी मजदूर वी.आर.एस. ले लेंगे। कैन्टीन वरकरों को उत्पादन में लेने की बातें वी. आर. एस. के बाद ट्रेनी-नई भर्ती के जंजाल द्वारा नौकरी छुड़वाना ही लगता है।"

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

ए.पी. इंजिनियरिंग मजदूर: "22ए सुन्दर कॉलोनी एन एच-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1700 और ऑपरेटरों की 2200-2300 रुपये। एक शिफ्ट 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। छुट्टी के दिन भी जबरन ओवर टाइम। फैक्ट्री में काम करते 45 मजदूरों में से 4-5 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ.।"

लखानी (इण्डिया) मजदूर : "प्लॉट 143-4 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में जून के ओवर टाइम के पैसे आज 8 अगस्त तक नहीं दिये हैं।"

पूजा फोर्ज वरकर : "14/4 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में रोज 12½ घण्टे की ड्युटी है।"

एच.जे. इंजिनियर्स वरकर : "352 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1700-1800 रुपये। जून और जुलाई की तनखायें आज 10 अगस्त तक नहीं दी हैं।" **श्री प्लास्टिक मजदूर:** "52 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा आज 24 अगस्त तक नहीं दी है।"

दिल्ली से –

डी.ए. के 41 रुपये जुड़ने के बाद अब दिल्ली में 8 घण्टे की ड्युटी और हफ्ते में एक छुट्टी पर कम से कम तनखा हैल्पर की 3312 रुपये (8 घण्टे के 127 रुपये 40 पैसे); अर्ध-कुशल श्रमिक की 3478 रुपये (8 घण्टे के 133 रुपये 80 पैसे); कारीगर की 3736 रुपये (8 घण्टे के 143 रुपये 70 पैसे)। स्टाफ में कम से कम तनखा अब मैट्रिक से कम की 3505 रुपये, मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 3760 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4072 रुपये।

के.डी. एस. एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट एफ-3/5 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागा काटने वाली महिला मजदूरों को 8 घण्टे के 60 रुपये और अन्य हैल्परों को 8 घण्टे के 70 रुपये। सिलाई कारीगरों में टोपी वालों को 8 घण्टे के 120-132 रुपये (एक को 200 रुपये) और अन्य को 120 रुपये। पैसे महीने में देते हैं। रक्षाबन्धन, 15 अगस्त, जन्माष्टमी को फैक्ट्री बन्द – इन दिनों की दिहाडी नहीं। कढाई कारीगरों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर 26 दिन के 4000-4500 रुपये। सफाई कर्मियों को 8 घण्टे पर 30 दिन के 2200 रुपये। सिलाई कारीगरों और हैल्परों की ड्युटी सुबह 9 से रात 8 बजे तक है। आधा घण्टा भोजन अवकाश का तथा 15 मिनट चाय के (कुल 45 मिनट) पर एक घण्टा काट कर 2 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं परन्तु उनका भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। नाइट लगाते हैं तब रात 1 बजे छोड़ते हैं। साँय 4 ½ बजे कम्पनी एक कप चाय देती थी, बाहर नहीं जाने देती थी। दस अगस्त से कम्पनी ने चाय देनी बन्द कर दी और बाहर भी नहीं जाने दे रही थी – हम मजदूरों ने विरोध किया तब बाहर जाने की अनुमति दी। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है, पीने का पानी ठीक नहीं है, लैट्रीन बदबू मारती हैं। फैक्ट्री में 200 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 10 के ही हैं। जाँच वालों के आने की बात पर 24 जुलाई को 12 बजे कम्पनी ने कई मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर कर दिया था – जाँच वाले नहीं आये। रक्षाबन्धन के दिन, 9 अगस्त को कढाई वाले सुबह 8 बजे से ड्युटी पर थे। हैल्पर व सिलाई कारीगर 9 बजे ड्युटी के लिये पहुँचे तो गेट से लौटा दिया। कढाई वालों की 8 की बजाय साँय 6 बजे छुट्टी की। सरकारी जाँच की बात थी। अगले रोज हम ड्युटी पर पहुँचे तब हम ने सब मशीनों के धागे टूटे पाये, ट्राली बाहर कर दी गई थी, मास्टर को भेज हटा कर फिनिशिंग में भेज दी थी.... जाँच की खानापूर्ति हुई थी। फैक्ट्री में अधिकारी गन्दी भाषा इस्तेमाल करते हैं। जुलाई की तनखा आज 18 अगस्त तक नहीं दी है।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

कोटा से –

उदपुरिया गाँव कोटा जिले में एक तालाब के इर्द-गिर्द बसे करीब सौ घरों का जमघट है। खेती, नौकरी, रोज़गार से गुज़र-बसर चलती है। करीब 15 वर्ष हुये, उत्तरी एशिया में बसने वाले जाँगिल (पेन्टेड स्टॉर्क) नामक पक्षियों के एक झुण्ड ने उदपुरिया को अपना सर्दियों का डेरा बना लिया। अब हर अगस्त में दो-तीन सौ पक्षी यहाँ आते हैं, खेलते-खाते हैं, बच्चे जनते हैं और नई पीढी के उड़ने लायक होने पर फरवरी में गायब हो जाते हैं। गाँव वाले पक्षियों का इंतजार करते हैं, उन्हें हानि से बचाते हैं, तालाब में मछली न पकड़ कर पक्षियों की मदद करते हैं। पर पर्यटन और वन विभागों की पैनी नज़र इधर पड़ चुकी है। पर्यटन विकास के लिये काफी पैसा मुहैया हो चुका है। अन्य जगहों में ऐसे अनुभवों को देखते हुये गाँव वालों को आशंका है कि तालाब के पानी की घेराबंदी कर उन्हें और उनके मवेशियों को पानी से बेदखल कर दिया जायेगा। गाँव वाले इस सरकारी-व्यावसायिक आपदा से निपटने के लिये तरीके ढूँढ रहे हैं।

असम से –

दिसपुर स्थित गोगिया मोटर व गॉड स्पीड मोटरसाइकिल कम्पनी महीने में 15-20 कार तथा 40-45 बाइक की बिक्री करती है। यहाँ काम करते 80 मजदूरों में से 10 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। हैल्परों की तनखा 2000-2500, कारीगरों की 3000-3500, कुशल कारीगरों की 4000-5000 रुपये। गार्डों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2500 रुपये। ड्राइवरों को 15 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने के 4500 रुपये। कम्पनी दिन में मात्र एक कप चाय देती है। पीने का पानी बहुत गन्दा है।

नोएडा में

नोएडा के सैक्टर-6 स्थित आर्ट ब्रश बनाने वाली फैक्ट्री में 12 घण्टा रोज काम पर हैल्पर को महीने के 1800 रुपये देते हैं। प्रतिदिन 3-4 घण्टे ओवर टाइम करना भी जरूरी है। फैक्ट्री में पीने के लिये साफ पानी नहीं है और ड्युटी शुरू होने के बाद बाहर नहीं जा सकते – गेट बन्द कर देते हैं। ब्रश लकड़ी को घिस कर बनाये जाते हैं। बुरादा नाक और मुँह में जाता है जिससे पेट, सीने व गले की क़ई बीमारियाँ हो जाती हैं। फैक्ट्री में बात-बात पर माँ-बहन की गाली देना आम रिवाज है – गाली का विरोध करने पर थप्पड़ तक जड़ दिये जाते हैं। सुपरवाइजर हर वक्त सिर पर सवार रहते हैं – काम, तेज काम, डाँट, धमकी का सिलसिला। फैक्ट्री में भर्ती ठेकेदार के जरिये की जाती है और कम्पनी की मदद से ठेकेदार की साँठगाँठ स्थानीय नेताओं व पुलिस से है। फैक्ट्री में भर्ती व निकाले जाना लगातार चलता है और 10-15 दिन की दिहाड़ियाँ हड़पना आम बात है। निकाले जाने के बाद पैसों के लिये चक्कर कटवाये जाने से कोई मजदूर थकता नहीं तो गुण्डों के जरिये उसे भगाया जाता है।

ये हालात नोएडा की लगभग सभी फैक्ट्रियों में हैं। (जानकारी एक नये मजदूर, शिवराम के "बिगुल" के अगस्त 06 अंक में छपे पत्र से। बिगुल, 69 बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड़, निशातगंज, लखनऊ-226006)

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

विचारणीय

कृपया सूअरों को गाली न दें

अगस्त के आरम्भ में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में छात्रों के एक समूह द्वारा संसद भवन को सूअरबाड़ा प्रचारित करने पर विभिन्न प्रकार के राष्ट्रवादी विरोध में चीखे।

प्रकृति के एक अंश के तौर पर अपनी पहचान से मानव किस कदर जुदा हो गये हैं इसका अन्दाजा आज छाये सफेद अन्धेरे से लगाया जा सकता है।

अंश द्वारा अन्य अंशों से सामंजस्य, सम्पूर्ण से सामंजस्य की मानव प्रवृति के टूटने-बिखरने ने उस त्रासदी को जन्म दिया जिसके शिकार अन्य जीव योनियों तथा पृथ्वी (व अन्तरिक्ष) के संग स्वयं हम मनुष्य हुये हैं। संग्रह-संचय और उनके आकार-प्रकार कब मानव योनि को विनाश की राह पर ले आये यह धुँधलके में है परन्तु संग्रह-संचय की बढती हवस के अनन्त ताण्डव से अनभिज्ञ आज शायद ही कोई हो। सम्पूर्ण विनाश की कगार.....

"अनजाने" सामंजस्य के दीर्घ काल में मानव योनि का अन्य योनियों के साथ-साथ स्वयं पृथ्वी के संग सहअस्तित्व रहा। उस दौरान व्यक्ति और समुदाय के बीच भी सामंजस्य था। इन पाँच-सात हजार वर्ष में ही संग्रह-संचय तथा इन से जुड़ा दोहन उल्लेखनीय और फिर सर्वग्रासी बने हैं। गाय को पालतू बनाने जैसा अन्य जीवों का आरम्भिक दोहन-शोषण अपने संग मानव समुदायों में स्वामी व दास के सम्बन्ध लाया, समुदाय की टूटन लाया। खेती जैसा पृथ्वी का आरम्भिक दोहन-शोषण अपने संग राजे-रजवाड़ों वाली ऊँच-नीच लाया। पृथ्वी का बढता दोहन-शोषण, अन्य जीव योनियों व वनस्पतियों का बढता दोहन-शोषण, स्वयं मनुष्यों का बढता दोहन-शोषण आज मानव निर्मित प्रदूषण को अन्तरिक्ष तक पहुँचा कर सम्पूर्ण विनाश की कगार.....

जीव के लिये मृत्यु स्वाभाविक है। समुदाय की टूटन ने मनुष्यों के लिये इस स्वाभाविक को, मृत्यु को असहनीय बनाया। पुरुष-प्रधानता की विकृतियों के संग-संग अमरत्व की अति इच्छा (अमृतों की तलाश) और मोक्ष-मुक्ति की अति पीड़ा (जन्म ही शाप) के अनेक धर्म-दर्शन उभरे। सब योनियों में मानव योनि को श्रेष्ठ घोषित करते, स्वयं को श्रेष्ठ घोषित करते हम मनुष्य अन्य योनियों के नामों व कथित अवगुणों का प्रयोग आपस में गाली देने, अपमान करने में करते आये हैं। मानवों में पुरुष-प्रधानता ने स्वाभाविक स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर अनेकानेक बन्धन जकड़ कर, अधिकतर स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को पाप करार दिया। नारी को पाप की मूर्ति घोषित करने के संग-संग स्त्री शब्द और महिलाओं के कथित अवगुणों का प्रयोग पुरुष आपस में गाली देने, अपमान करने में करते आये हैं। व्यवहार के विपरीत, प्रतीक के तौर पर, विगत के अवशेष के तौर पर सूर्य की पूजा, सर्प की पूजा, गाय की पूजा, नारी की पूजा.....

दास, भूदास, किसान-दस्तकार, मजदूर के रूप में पुरुष के पीड़ित होने पर भी पुरुष-प्रधानता के रंग में रंगे होना अतिरिक्त समस्यायें लिये है (हावी आचार-विचार के चलते स्त्रियों का पुरुष-प्रधानता के रंग में रंगे होना भी इसी श्रेणी में है)। अन्य योनियों व पृथ्वी-अन्तरिक्ष के सम्बन्ध में स्त्री-पुरुष एकमत-से रहे हैं। इधर मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन ने पुरुष-प्रधानता की इकाई, परिवार को बिखराव के चरण में ला दिया है। और, स्त्री तथा पुरुष, दोनों अधिकाधिक गौण.....

"कुछ नहीं हो सकता", असहायता का अहसास बहुत व्यापक है परन्तु विनाश के कगार से लौटने के आचार-विचार हम मनुष्यों के लिये सर्वोपरि महत्व के हैं। इस सन्दर्भ में, हमारे विचार से, नये समुदायों के लिये प्रयास, अन्य योनियों तथा पृथ्वी-अन्तरिक्ष के संग सामंजस्य की कोशिशें हम मानवों के लिये प्रस्थान बिन्दू हैं।

मण्डी-मुद्रा के दबदबे के इस दौर में दमन-शोषण पर पर्दा डालती संसद का पर्दाफाश करना प्राथमिक आवश्यकताओं में है। इस सन्दर्भ में हमारे अनुकरणीय पूर्वजों ने संसद को बकवासघर और सूअरबाड़ा कहा है। इधर कुटिल चाणक्य के वारिस प्रतिनिधि-नुमाइन्दा प्रणाली के व्यापक प्रसार के जरिये भ्रष्टाचार का विकेन्द्रीकरण कर हमारी रग-रग को प्रदूषित करने में जुटे हैं, सफेद अन्धेरे को फैलाने में लगे हैं। ऐसे में संसद के प्रति, प्रतिनिधि-प्रणाली के प्रति आक्रोश का विगत से बहुत अधिक होना बनता है। इसके लिये, हमारे विचार से, नई भाषा की आवश्यकता है।

"– सूअर जंगलों में कन्द-मूल खाते और शीतलता के लिये साफ-सुथरी गीली मिट्टी में लोटते हैं। पालतु बना और शहरों में ला कर हम ने सूअर को गन्दगी का पर्याय बना दिया है। लेकिन सूअर के तन के संग हम अपने मन को देखें तो मनुष्यों से अधिक मैली कोई चीज आज शायद ही हो।" (फमस के दिसम्बर 03 अंक में " जीवन बनाम काम-पैसा-काम-पैसा" से)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।